एकलव्य

# खिचड़ी...

## एक लोककथा

CBSE Recommended

प्रस्तुति जितेन्द्र कुमार
चित्र दुर्गाबाई व्याम

# खिचड़ी... एक लोककथा

प्रस्तुति जितेन्द्र कुमार
चित्र दुर्गाबाई व्याम

एकलव्य

**खिचड़ी...** एक लोककथा

**KHICHADI... EK LOKKATHA**

प्रस्तुति: जितेन्द्र कुमार
चित्र: दुर्गाबाई व्याम

© एकलव्य, अगस्त, 2010
इस किताब के किसी भी भाग का गैर-व्यावसायिक शैक्षणिक उद्देश्य से कॉपीलेफ्ट चिह्न के तहत उपयोग किया जा सकता है। स्रोत के रूप में किताब का उल्लेख अवश्य करें तथा एकलव्य को सूचित करें।

पहला संस्करण: अगस्त 2010 (5000 प्रतियाँ)
64,350 प्रतियाँ प्रकाशित एवं वितरित
दसवाँ पुनर्मुद्रण: फरवरी 2021 (10,000 प्रतियाँ)
ग्यारहवाँ पुनर्मुद्रण: मार्च 2021 (6000 प्रतियाँ)
बारहवाँ पुनर्मुद्रण: जुलाई 2021 (3000 प्रतियाँ)
तेरहवाँ पुनर्मुद्रण: जुलाई 2022 (5000 प्रतियाँ)
चौदहवाँ पुनर्मुद्रण: अक्तूबर 2023 (5000 प्रतियाँ)
पन्द्रहवाँ पुनर्मुद्रण: जून 2025 (5000 प्रतियाँ)
सौलहवाँ पुनर्मुद्रण: फरवरी 2026 (33000 प्रतियाँ)
कागज़: 100 gsm मैपलिथो व 220 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
ISBN: 978-81-89976-79-8
मूल्य: ₹ 35.00

पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित
पहली बार खिचड़ी सन् 2008 में बड़े आकार की किताब के रूप में प्रकाशित
यह किताब उर्दू में भी उपलब्ध।

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: बॉक्स कॉरोगेटर्स एंड ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल; फोन: +91 755 258 7551

एक बार बिरजू अपनी ससुराल गया।

बिरजू की सासू माँ ने उसे दाल और चावल से बनी एक चीज़ खिलाई। बिरजू को उसका स्वाद बहुत अच्छा लगा। उसने पूछा, “इसका नाम क्या है?”

सासू बोली, “खिचड़ी।”

बिरजू ने सोचा, “वापस घर जाकर भी मैं खिचड़ी ही खाऊँगा।”

लेकिन कहीं नाम न भूल जाए, इसलिए वह “खिचड़ी-खिचड़ी” बोलता हुआ घर की तरफ चल दिया।

चलते-चलते बिरजू का पैर एक गड्ढे में पड़ गया और उसे झटका लगा। झटके से हड़बड़ाकर बिरजू खिचड़ी के बदले “खाचिड़ी” बोलने लगा।

अब वह “खाचिड़ी-खाचिड़ी” बोलता हुआ जा रहा था।

रास्ते में एक किसान अपने खेत में मक्के के बीज बो रहा था।

उसे "खाचिड़ी-खाचिड़ी" सुनकर बड़ा गुस्सा आया।

किसान बोला, “मैं तो खेत में बीज बो रहा हूँ और यह कहता है ‘खा-चिड़ी’। ठहर जा! अभी बताता हूँ।” और वह बिरजू के पीछे दौड़ा।

बिरजू घबराकर बोला, “फिर मैं क्या बोलूँ?”

किसान बोला, “बोल उड़-चिड़ी।”

बिरजू “उड़चिड़ी-उड़चिड़ी” बोलता हुआ चलने लगा। आगे रास्ते में एक बहेलिए ने चिड़ियों को पकड़ने के लिए जाल बिछा रखा था। उसे “उड़-चिड़ी” सुनकर बड़ा गुस्सा आया।

बहेलिया गुस्से में बोला, “मैं तो चिड़ियों को पकड़ रहा हूँ और यह कहता है, ‘उड़-चिड़ी’। ठहर जा, अभी बताता हूँ।” वह भी बिरजू के पीछे दौड़ा।

बिरजू घबराकर बोला, “फिर मैं क्या बोलूँ?”

बहेलिया बोला, “बोल, बैठ-चिड़ी।”

अब बिरजू “बैठचिड़ी-बैठचिड़ी” बोलता हुआ जा रहा था। चलते-चलते उसे भूख लगने लगी।

बिरजू एक होटल में गया और बोला, “मैं बैठचिड़ी खाऊँगा।” होटल में किसी को समझ नहीं आया कि बिरजू क्या माँग रहा है।

मगर बिरजू “बैठचिड़ी-बैठचिड़ी” की रट लगाए था। होटलवालों को गुस्सा आ गया। उन्होंने बिरजू की जमके पिटाई कर दी। इतने में बिरजू की माँ वहाँ आ पहुँची।

माँ बोली, “अरे, तुमने तो पीट-पीटकर मेरे बेटे की खिचड़ी ही बना दी।”

“खिचड़ी!” सुनकर बिरजू खुश हो गया। बोला, “हाँ-हाँ, मैं खिचड़ी ही तो खाना चाहता हूँ।”

एकलव्य

मूल्य: ₹ 35.00

parag

AN INITIATIVE OF
TATA TRUSTS

9 788189 976798